Page No.:
Date: / /

वैदिक कालीन शिक्षण - विधि → हमारे प्राचीन भारतीय शिक्षा की अध्यापन पद्धति का आधार मनोवैज्ञानिक था और ऋग्वैदिक मंत्रों के मौखिक संरक्षण के लिए एक विशेष शिक्षण पद्धति व्यवहार में होती थी जिसके फलस्वरूप उक्त मंत्र शताब्दियों तक श्रुति रूप में ही ज्यों के त्यों संरक्षित होते चले आये थे।

1- रटने की पद्धति → इस पद्धति में शिष्य आचार्य के सामने पुन: उसे दुहराते थे और आचार्य उनकी अशुद्धियों को ठीक करता था। वैदिक शिक्षा पद्धति में ध्वनियों व शब्दों के शुद्ध रूप पर विशेष बल दिया जाता था। इसे कंठाग्र करने की पद्धति भी कहते हैं।

2- मनन करने की पद्धति → कंठाग्र करने की विधि के साथ-2 वैदिक काल में चिन्तन - मनन की अध्यापन विधि भी प्रचलित थी। किसी मंत्र को सुनकर याद करने को श्रुतधर कहा जाता था तथा इत्सिंग ने अपनी पुस्तक 'Record of the western world' में इनके सम्बंध में कहा है 'मैं ऐसे लोगों से स्वयं मिला हूँ।' इस शिक्षण पद्धति को यांत्रिक कहेंगे। मंत्रों को आन्तरिक स्वरूप को ग्रहण करने के

Scanned with CamScanner

लिये जो पद्धति है वह मनन कहलाती है। इसमें छात्र मनन द्वारा प्रत्येक शब्द मंत्र का तात्पर्य समझने की चेष्टा करता था और आचार्य की सहायता से उसमें ध्वनित आध्यात्मिक तत्वों की अनुभूति प्राप्त करता था।

3- स्वाध्याय की पद्धति → छात्र को 'स्वाध्याय' का भी अभ्यास करना पड़ता था और 'ब्रतचारी' बनकर कठोर साधना में प्रवृत्त हो अपनी समस्त चित्तवृत्तियों को ब्राह्य जगत से परे रख परम ज्ञान की ओर केन्द्रस्थ हो जाता था। मनन विधि द्वारा शिष्य-गुरु-ऋण से उऋण होता था तथा स्वाध्याय से आत्मानुभूति प्राप्त करता था।

4- ब्राह्मण संघ → वैदिक काल में 'ब्राह्मण संघ' नामक संस्था भी स्थापित थी जिसमें मेधावी छात्रों को विचार विनिमय व गूढ़ातिगूढ़ तत्वों के हृदयंगम करने का पूर्ण अवसर प्राप्त था। इस संस्था को हम आधुनिक सेमिनार (Seminar) कह सकते हैं। इसमें सेमिनार की सभी विशेषताएँ विद्यमान थी।

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date : / /

वैदिक कालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम →

(क) परा या आध्यात्मिक विद्या (Para or Spiritual vidya) →

इसमें चारों वेदों का अध्यापन करना आवश्यक था। ये चारों वेद (1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद थे। इसमें वेदांग, उपनिषद पुराण, दर्शन नीतिशास्त्र आदि का भी समावेश किया गया है।

(ख) अपरा अथवा लौकिक विद्या (Apara or Worldly vidya) →

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों का समावेश होता है - (1) इतिहास (2) औषधिशास्त्र (3) अर्थशास्त्र (4) ज्योतिष विद्या (5) भौतिक शास्त्र (6) प्राणिशास्त्र (7) भूगर्भ विद्या (8) तर्क शास्त्र (9) रसायनशास्त्र (10) धनुर्विद्या (11) सर्पविद्या (12) शल्य विद्या (13) कल्प।

Scanned with CamScanner

शिक्षा - केन्द्र (center of Education) →

वैदिक काल में प्रारम्भ से ही शिक्षा दो मुख्य रूप में प्रचलित थे· मौखिक और स्वाध्याय अर्थात चिन्तन व मनन वैदिक मंत्र शताब्दियों तक श्रुति रूप में सुरक्षित रहे।

1- प्रारम्भिक वैदिक शिक्षण - केन्द्र पारिवारिक विद्यालय ही थे। ऐसा स्व० श्री० मजूमदार का विश्वास था।

2- उत्तरवैदिक विद्यालयों में ऋषि-पुंजों के साथ-2 अन्य वर्गों को भी प्रवेश दिया गया ऐसा वेबर ने अपनी पुस्तक 'History of India' में कहा है।

गुरु - शिष्य के परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में लौकिक व आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करता था। आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान की आदर्श पृष्ठभूमि पर ही होती थी।

Scanned with CamScanner